ISSN 2231-1629 Knowledge Resonance
A Half Yearly National Peer-Reviewed & Indexing with SJIF Impact Factor Research Journal
IMPACT FACTOR 8.072

भारत की विदेश निती

डॉ. स्मिता दि. जोशी
राज्यशास्त्र विभागप्रमुख
प्रिंसिपल अरुणराव कलोडे महाविद्यालय, नागपूर.

सारांश :–
किसी भी देश की विदेश निती इतिहास से गहरा संम्बन्ध रखती है। भारत की विदेश निती भी इतिहास और स्वतन्त्रता आन्दोलन से सम्बन्ध रखती है। ऐतिहासिक विरासत के रुप मे भारत की विदेश निती आज उन अनेक तथ्यों को समेट हुए है जो की भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन से उपजे थे। शान्तिपूर्व सहअस्तित्व व विश्वशान्ति का विचार हजारोवर्ष पुराने उस चिन्तन का परिणाम है जिसे महात्मा बुध्द व महात्मा गांधी जैसे विचारको वे प्रस्तुत किया था। इसी तरह भारत की विदेश निती मे उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद व रंगभेद की निती का विरोध महान राष्ट्रीय आन्दोलन की उपज है। भारत के अधिकार देशो के साथ औपचारिक राजकार्य सम्बन्ध है जनसंख्या की दृष्टी से यह दुनिया का दुसरा सबसे बडा देश है। भारत दुनिया का सबसे बडा लोकतंत्रात्मक व्यवस्था वाला देश भी है और इसकी अर्थव्यवस्था विश्व की बढती अर्थव्यवस्थाओ मे से एक है।

प्रस्तावना :–
भारत की विदेश निती के निर्धारणकर्ता पं. जवाहरलाल नेहरु ने कहा था कि 'भारत की विदेश निती का मूल उद्देश विश्व के समस्त राष्ट्रो के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना है । भारत इस निती का निरन्तन पालन करता रहा है । प्राचीन काल मे भी भारत के समस्त विश्व से व्यापारिक, सांस्कृतिक व धार्मिक सम्बन्ध रहे है। समय के साथ साथ भारत के कई भागो मे कई अलग अलग राजा रहे, भारत का स्वरुप भी बदलता रहा किंन्तु वैश्विक तौरपर भारत के सम्बन्ध सदा बने रहे । सामाईक सम्बन्धो की बात की जाए तो भारत की विशेषता यही है कि वह कभी भी आक्रमक नही रहा । 1947 मे अपनी स्वतंत्रता के बाद से भारत के अधिकांश देशो के साथ सौहाईपूर्व सम्बन्ध बनाए रखा है । 1990 बाद आर्थीक तौर पर भी का इतने विश्व को प्रभावित किया । सामाईक तौर पर भारत ने अपनी ' ाक्ती को बनाए रखा है और विश्व शान्ति मे यथासंभव योगदान करता रहा है । पाकीस्तान व चीन के साथ भारत के संबंध कुछ तणावपूर्व अवश्य है।

स्वतंत्रता स पहले भारत की विदेश निती का निर्माण:
स्वतंत्रता के पहले भारत की विदेश निती का विकास भारत मे इस इंडिया कम्पनी के शासनकाल मे ही हुआ, लेकीन इससे पहले भी भारतीय चिन्तन से शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व अहिंसा जैसे सिध्दांतो के साथ साथ कौटिल्य के चिन्तन मे कुटनितीक उपायो का भी वर्णन मिलता है । किसी भी देश की विदेश निती के उद्देश सुरक्षा और एकता को बनाये रखता, राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरो को दूर करना आर्थीक हितो को आगे बढाना, राष्ट्रीय शक्ती का विकास करना जिससे राष्ट्रीय प्रतिष्ठा में वृध्दी हो राजनितिक व्यवस्था सृदृढ करना और अन्य देशो मे निर्यात की इच्छा करना भारत के अधिकतर देशोके साथ औपचारिक राजनयिक संम्बध है। प्राचीन काल मे भी भारत के समस्य विश्व से व्यापारिक, सांस्कृतिक व धार्मिक संम्बध रहे है। भारत की विशेषता यही है की वह कभी भी आक्रमक नही रहा। 1947 मे अपनी स्वतंत्रता के बाद से भारत ने अधिकांश देशो के साथ सौदाईपूर्व संबंध बनाए रखा है। 1990 के बाद आर्थीक तौरपर भी भारत ने विश्व को प्रभावित किया। सामाईक तौर पर भारत ने अपनी ' ाक्ती को बनाए रखा है और विश्व शान्ति मे यथासंभव योगदान करता रहा है। भारत ने क्षेत्रीय सहयोग और विश्व व्यापार संगठन के लिए एक दक्षिण एशियाई एसोसिएशन मे प्रभावशाली भूमिका निभाई है। भारत ने विभिन्न बहुपक्षीय मंचो सबसे खासकर पूर्वी एशिया के शिखर बैठक और जी–85 मे एक सक्रीय भागीदारी निभाई हे । आर्थीक क्षेत्र मे भारत का दक्षिण अमेरीका एशिया और अफ्रीका के विकासशील देशो के साथ घनिष्ठ संबंध है।

वर्तमान स्थिती मे भारत की विदेश निती :–
किसी भी अन्य देश की तरह भारत की विदेश निती अपने प्रभाव क्षेत्र को व्यापक बनाते, सभी राष्ट्रो से अपनी भूमिका बढाने और एक भरती हुई शक्ती की रुप से अपने को स्थापित करने की परिकल्पना करती है । वर्ष 2021 विदेश निती के उद्दशो को पूरा करने के लिए कई चुनौतियॉ और अवसर प्रस्तृत करता है । जैसे की दक्षिण एशिया मे एक बडी शक्ती के रुप से चीन का उदय और भारत के पडोसी देशो पद इसका बढता प्रभाव भारत के लिए एक बडी चिंता का कारण है । इसके अतिरिक्त हाल ही से चीन तथा युरोपिय संघ के बीच निवेश समझौते पर हुई चर्चाओ ने covid-19 महामारी के बाद चीन के अलग अलग पडने से जुडे मिथक को भी समाप्त किया है ।

भारत की वर्तमान विदेश नितो के तत्व :–
वर्तमान प्रधानमंत्री ने प्रधानमंत्री बनने से पहले ही नरेंद्र मोदी ने संकेत दिया था कह उनकी विदेश निती भारत के पडोसियो के साथ संबंधो को सुधारने पर केंद्रीत करेगी । उन्होने अपनी सरकार के उद्घाटन समारोह मे दक्षिण एशियाई देशो के सभी ' ाासनाध्यतो को आंमत्रित करके अच्छी शुरुआत की और दुसरे दिन अपने कार्यालय मे उन्होने व्यक्तीगत रुप से सभी के

साथ द्विपक्षीय वार्ताकी जिसे मीडिया द्वारा लघु सार्क सम्मेलन का नाम दिया गया । बाद मे ईसरो मे एक शुभारंभ समारोह के दौरान उन्होने भारतीय वैज्ञानिको से पुरे दक्षिण एशिया के लोगो के साथ टेली मेडिसिन, ईलर्निग आदी जैसी तकलीक के कल साझा करने के लिए समपित एक उपग्रह विकसित करने का प्रयास करने को कहा ताकी वर्तमान मे इस क्षेत्र मे संचालित भारतीय तकनीकी और आर्थीक सहयोग कार्यक्रम को बल मिल सके ।

हमारी विदेश निती का प्रमुख महत्पूर्व क्षेत्रस्वाभाविक रुप से हमारा पडोसी है क्योकी जबतक शान्तिपूर्ण और समृध्द नही होगा हम सामाजिक आर्थीक विकास के अपने प्राथमिक कार्यपर ध्यान नही दे सकेंगे इसलिए हमे अपने पडोसियो के साथ घनिष्ठ राजनितिक आर्थीक और सामाजिक संबंधो को प्राथमिकता देती है । अपने पडोसियो के साथ मजबुत और स्थायी भागीदारी स्थापित करने के लिए प्रतिबध्द है । भारतीय विदेश निती का सबसे महत्वूपर्ण तथा विलक्षण सिध्दान्त गुटनिरपेक्षता है । जिस समय दोनो महाशक्तीया शीतयुध्द की निती पर चल रही थी भारतीय निर्माताओ ने विश्व शांति तथा भारतीय सुरक्षा तथा आवश्यकता ओ के हित से यही ठीक समझा की भारत को शीत युध्द तथा शक्ती राजनिती से दूर रखा जाए । इस प्रकार भारत ने अलग रहते हुए गुटनिरपेक्षता की निती को अपनाया। स्वतंत्रता से लेकर आजतक भारत इस निती का पालन कर रहा है ।

निष्कर्ष :–

भारत की विदेश निती का प्रमुख उद्देश राष्ट्रीय हित की रक्षा व उसकी प्राप्ती करना है । इसके लिए वह विदेशो मे राजनितीक अधिकारी नियुक्त करती है, अंतरराष्ट्रीय व क्षेत्रीय संगठनो का सम्मान करती है और अंतररा" ट्रीय पटल पर कुटनितीक वार्ताए जारी रखकर अपने विहित उद्देशो को प्राप्त करती है ।

संदर्भ :–

1. *डॉ. बी. सिंह गहलौत, भारतीय विदेश निती, अर्जून पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली. 2006*
2. *डॉ. राजबाला सिंह, भारत की विदेश निती, आविष्कार पब्लिशिंग डिस्ट्रब्युटर्स, जयपूर 2005*
3. *बी.सी. नरुला, प्रमुख राष्टो की विदेश निती, अर्जून पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली. 2009*